Chapter. 5

पंचम अध्याय

रचनाओं का वर्ण्य-विषय

(पृष्ठ १९६-२१४)

रचनाओं का वर्ण्य-विषय

इस अध्याय में भगवंतराय के मंडल के कवियों की रचनाओं की विषय-वस्तु का परिचय दिया जा रहा है। इस सम्बन्ध में हमने प्रबंध के विषय के अनुसार केवल उन्हीं रचनाओं को इसके अंतर्गत समाविष्ट किया है जो या तो भगवंतराय के संरक्षण काल में लिखी गई या उनसे सम्बन्धित कवियों द्वारा उनके जीवन काल के बाद स्वयं उनके व्यक्तित्व या जीवन को कथ्य बनाती हैं। इसके अतिरिक्त मंडल के कवियों के उन ग्रंथों का भी संक्षिप्त विवरण दे दिया गया है, जो या तो प्रकाशित नहीं हैं या उनके संबंध में भ्रम पूर्ण अथवा अत्यल्प जानकारी है। इस प्रकार `जैसिंह विनोद,` राजा भगवंतसिंह की भगवंत विरुदावली, भगवंतराय खीची का जंगनामा का प्रमुख रूप से और मदन रत्नार्णव, छंद विचार, रसदीपक, अलंकार दीपक, रति विनोद चन्द्रिका प्रभृति रचनाओं का गौण रूप से परिचय दिया गया है।

जैसिंह विनोद

प्रति परिचय : देवकी प्रस्तुत रचना `जैसिंह विनोद` की प्रतिलिपि सुखनंद शुक्ल ने संवत् १८५८ में की थी। प्रतिलिपिकार ने स्वयं ही इसका उल्लेख ग्रन्थ में कर दिया है। कागज और स्याही देखने में काफी पुराने प्रतीत होते हैं अतः प्रतिलिपिकार के शब्दों की प्रामाणिकता पर सन्देह करने का कोई कारण नहीं जान पड़ता। इसके पृष्ठों का आकार ८" x ४" है। कुल ३५ पन्नों में रचना समाप्त होती है। इसके अन्तर्गत सात विनोद(अध्याय) और छंद संख्या २६३ है। सबसे अधिक दोहा छंद का प्रयोग है जिसकी संख्या १४६ और शेष १४४ छन्दों में कवित्त-सवैया छंद हैं।

विशेष : प्रतिलिपिकार सुखनंद शुक्ल कम पढ़े लिखे व्यक्ति जान पड़ते हैं। इस कमी के कारण रचना में अनेक दोष व्याप्त हो गये हैं। कहीं कहीं छंदों की पंक्तियां और शब्द छोड़ गये हैं तो कहीं किसी विशेष पंक्ति में कुछ अन्यत्र का अंश जोड़ या घटा दिया है। लिखने में काट कूट और अतिरिक्त लिखावट (over writing) भी है। देव की इस रचना में उपलब्ध जो छन्द या दोहे, जो अन्य रचनाओं में भी देखने को मिल जाते हैं, उनको देखने से यह दोष अत्यंत स्पष्ट हो जाता है।

शब्द रसायन के २८वें पृष्ट पर मुद्रित इस दोहे को देखिये -

रस, सिंगार हास्य अरु करुना, रौद्र(हु) वीर
भयानक कहिए

अद्भुत अरु वीभत्स त्सांत काव्य मते, ये नव रस कहिए

परन्तु जैसिंह विनोद में इस का पाठ इस प्रकार है -

रस भेद रस सिंगार हास्ये अरु करुणा रौद्र वीर भयानक कहिये

वीभत्सो अदभुत अरु सांत काव्य मृत एनवं रस लहिजे ।

' काव्य मत ' को लिपिकार ने ' काव्यमृत ' लिख दिया है । यह तो साधारण सा प्रमाद है, पर कहीं कहीं तो छन्द की पूरी पंक्ति ही भ्रष्ट मालूम पड़ती है । परिशिष्ट में हमने सर्वत्र मूलप्रति का ही अनुसरण किया है केवल कुछ स्थानों पर जहां अन्य किसी प्रति में कोई छन्द मिल गया है और हमारी प्रति का लेख स्पष्ट रूप से अर्थ का अनर्थ करता प्रतीत हुआ है केवल वहीं पाठ बदल दिया गया है, पाद टिप्पणी में इस अंतर को देने की आवश्यकता नहीं समझी गई क्योंकि वे लिपिकार के मूल के ही उदाहरण हो सकते थे और कुछ नहीं ।

प्रामाणिकता : जैसिंह विनोद की प्रामाणिकता के लिए वहिर्साक्ष्य नहीं प्राप्त होता । न तो देव के ही प्राप्त किसी ग्रन्थ में इस ग्रन्थ का संकेत मिलता है और न भोगीलाल एवं शिवसिंह सेंगर से लेकर अब तक देव-काव्य के अनुसंधायकों ने ही इसका कहीं उल्लेख किया है । अत: स्पष्ट है कि इसके लिए केवल अन्तर्साक्ष्यों पर ही निर्भर करना पड़ेगा । इस प्रश्न पर बिचार करते समय हम निम्न प्रमाण प्रस्तुत कर सकते हैं :-

१- स्वयं देव ने इस ग्रन्थ में अपना परिचय दे दिया है जो अन्यत्र प्राप्त उनके परिचय से पूर्ण रूप से साम्य रखता है । कवि-परिचय का दोहा इस प्रकार है -

नगर इटाए वास जिहि काश्यप वंस प्रमोद

देव दत्त कवि कृत सरस श्री जैसिंह विनोद ।

परिचय के अतिरिक्त कवि ने प्रत्येक विनोद अध्याय के अन्त में पुष्पिका दी है जो इस प्रकार है ' इति श्री महाराजकुमार श्री जैसिंह विनोद देवदत्त कवि विरचिते राजवंश वर्णन पूर्वक श्रृंगार रस वर्णन प्रस्तावना प्रथम विनोद ' ऐसी पुष्पिका उनके अन्य ग्रन्थों में भी मिलती है । ध्यान देने की बात है कि कवि ने प्राय: सभी ग्रन्थों में इस प्रकार की

पुष्पिकाओं में अपना पूरा नाम ` देवदत्त ` ही लिखा है ।

२- देव के सभी ग्रन्थों में छन्दों का उलट फेर मिल जाता है । कुछ नये और कुछ पुराने छन्दों को मिलाकर वे एक नई रचना को जन्म दे डालते थे । जैसिंह विनोद के काफी छन्द उनके अन्य ग्रन्थों में मिल जाते हैं । वास्तव में इनकी संख्या इतनी अधिक है कि उदाहरण देने की आवश्यकता नहीं रह जाती है । उदाहरण के छन्दों के अतिरिक्त लक्षण के दोहे भी अन्य ग्रन्थों में मिलते हैं । नायिका के हाव प्रकरण के लक्षण ` रस-विलास ` से मिलते हैं तो ` रस प्रकरण की सारी सामग्री ज्यों की त्यों ` काव्य रसायन ` में रखी हुई मिल जाती है ।

३- देव अत्यन्त समर्थ कवि थे उनकी भाषा, उनके मुहावरे उनके बिम्ब आदि रीतिकाल के काव्य में अलग खड़े होकर बोलते हैं । देव को भाषा और अभिव्यक्ति की कुछ भंगिमायें विशेष रूप से भा जाती थीं और वे अक्सर अपने काव्य में उसका प्रयोग कर दिया करते थे । खिड़की के पास किसी नायिका का झर (लपट) की या चंचला की तरह दिख जाना, अचैजना (तृप्त होना) और ` बीस बिसे ` (पूर्ण रूप) जैसे रूढ़ अर्थवाची शब्दों के प्रयोग इनकी भाषा में एक विशेष प्रकार की व्यंजकता से सम्पृक्त होकर प्रयुक्त हुए हैं जिनका प्रस्तुत रचना में पूर्ण नियोग है ।

रस विलास की यह पंक्ति दृष्टव्य है -

` को बिरचै कुलकानि अचै मन, कै निहचै इह चैन चढ़ी है । `

` जैसिंह विनोद ` में इसी अचै शब्द का प्रयोग देखिये - ` अचै गये दृष्टि में दृष्टि लुभै कै ` वास्तव में दो शब्दों के या दो मुहावरों के प्रयोग भिन्न भिन्न कवियों में मिल सकते हैं परन्तु देव मुहावरों और शब्दों में नया अर्थ भरने में समर्थ हुए हैं । ` अचवना ` आचमन का अपभ्रंश है, जो भोजन के पश्चात् हाथ धोने की क्रिया के लिए प्रयुक्त होता है । इससे तृप्त होने का बोध होता है । इस शब्द को देव ने श्रृंगार के रंग में रंग दिया है । रस विलास की जो पंक्ति ऊपर लिखी गई है उसमें इसका अर्थ है ` कुलकानि को समाप्त करना ` और जैसिंह विनोद में उसी शब्द का अर्थ है ` तृप्त होना ` - प्रेमी प्रेमिका ने एक दूसरे को देखा और अपने हृदय की तृप्ति का भाव जता दिया । इस तरह की भाषा और शैली गत विशेषताएं जैसिंह विनोद में पर्याप्त रूप से विद्यमान हैं ।

जैसिंह विनोद में भगवंतराय की प्रशस्ति व उनके पूर्वजों की कीर्ति भी कवि ने

विशेष (मनो) योग (से) लिखी है । देव काव्य के इस अंशों में भी सर्वत्र उनके व्यक्तित्व की व उनकी शैली की स्वगत विशेषता स्पष्ट दिखाई पड़ती है । जैसिंह विनोद के इस छंद को इस दृष्टि से देखिये -

सकल महीजु (थ)पिर थाप्यो राज बीजु जाम्यो
पुन्य जल पीजु सुधा सागर की वीची है
चारूयो सिन्धु कूल कूल उलह्यो समूल
अनुकूल फूल फल दल साखा सुख सींची है
जाको करिवार परिवार लीलै वैरिन को
दान कर वार दरबार की दरीची है
दिल्ली सुलतान मध्यभूमि भूप मान मानो
मालो सुलतान चहुआन खान सीची है ।

अब उपर्युक्त छन्द की तुलना ' सुजान विनोद ' में पातीराय की प्रशंसा में लिखे गये छन्द के साथ कीजिये दोनों में कवि प्रौढ़ोक्ति सिद्धि शैली में अपने आश्रयदाता की कीर्ति का अतिरंजनापूर्ण वर्णन करता हुआ दिखाई पड़ता है । भाषा और इस प्रसंग की उक्तियों में भी बहुत कुछ एक स्वरता है :-

पातीराम नन्दन प्रतापी संक सापति की
कीरत कहानी जोति जागती जलप की
सत्रुन के सोखै परिपोखै परिवार तोखै,
' देव ' गुन पितरनि राखै न कलय की
दान फरि फंप चित चंपत कुबेर धन,
सम्पत्ति अंधनि कीन्ही दासी ज्यों तलय की
श्रीपति के अंक सिय सोवैनि:संक सकै,
मान के कलप तरु सोभा संकलय की ।

(सुजान विनोद)

दोनों ही उदाहरणों के रेखांकित अंशों में उक्ति और भाषा का साम्य दृष्टव्य है । शैली का साम्य तो है ही ।

रचना तिथि : कवि ने स्वयं ग्रन्थ में उसका रचना काल दे दिया है :

' सत्रहसै अरु उन्यासी(१७७६) संवत् विक्रम वर्ष
मारग सुदि ससि सप्तमी, लिषि जसिहं सहर्ष ।

वर्ण्य-विषय : प्रथम विनोद में ५० छंद हैं, जिनमें ४० दोहे और शेष १० कवित्त हैं । गणेश विनय के पश्चात् राधाकृष्ण के किशोर किशोरी रूप की स्तुति है । यह विनोद(अध्याय) भगवंतराय के पूर्वजों के इतिहास, उनके वंश एवं उनकी प्रशस्ति पर केंद्रित है । इस समस्त सामग्री का उपयोग भगवंतराय की जीवनी और ' इतिहास निरूपण ' के अध्यायों में किया गया है ।

द्वितीय विनोद में श्रृंगार रस का वर्णन है, जिसमें श्रृंगार का स्वरूप और श्रृंगार के भेद में उसे समाहित किया गया है । कवि ने श्रृंगार के आधार और विभावानुभाव तथा सात्विक और संचारियों को निर्धारित करने के साथ ही लक्षण भी दिये हैं । बाह्य और आन्तर संचारी भाव क्रम से ८ और ३३ गिनाये हैं ।

श्रृंगार का भेद संयोग और वियोग में माना है । वियोग के चार भेद होते हैं । पूर्वराग की अवस्था में १० दशायें होती हैं । इन दशाओं का निवेदन करके सखी नायक नायिका का मिलन कराती हैं और परिहास में उपसंहार करती है । तृतीय विनोद में नायिका वर्णन है । नायिका के ८ गुण होते हैं । मन वचन और काया की दृष्टि से नायिका की तीन अवस्थायें होती हैं । मानसिक दशा के विचार से आनन्दा, विमोहा और तृतीय दशा(इसका नामकरण नहीं है) होती है । प्रत्येक अवस्था १२ वर्ष की होती है । इस प्रकार ३६ वर्ष पर्यंत तक की नायिका का विचार होता है ।

इस विभाजन की विशेषता यह है कि कवि ने रस की दृष्टि से इसका आधार ग्रहण किया है । इन तीन अवस्थाओं में नवों रसों का समाहार कर दिया गया है । काया की दृष्टि से दूसरा भेद(कायिक) होता है । जो ७ वर्ष के क्रम से पांच अवस्थाओं को पार करता हुआ नायिका में ३५ वर्ष की अवस्था तक रहता है । देवता, गंधर्व और मनुष्य इन तीन अंशो की दृष्टि से इसका वर्गीकरण किया गया है । इन तीन आधारों का समाहार कवि ने नायिका में गौरी, लक्ष्मी और सरस्वती देवियों की स्थिति में कर दिया है । गौरी पूजा के लिए लक्ष्मी भोग के लिए और सरस्वती सन्तानोत्पादन के लिए निर्धारित की गई है ।

वचन (वाचिक) की दृष्टि से नायिका के स्वकीया, परकीया तथा सामान्या ये तीन भेद होते हैं । स्वकीया के तीन और परकीया के दो भेद किये गये हैं । स्वकीया के तीन भेदों में से प्रत्येक के १० अवान्तर भेद गिनाये गये हैं परकीया के दो भेदों में

से ऊढ़ा के संयोग की दृष्टि से १२ भेद होते हैं । सामान्या के भेद नहीं किये गये । इस प्रकार देव ने तीन(३०) बारह और एक के क्रम से नायिका के ४३ भेद किये हैं और इनमें से प्रत्येक के १८ भेद बता कर ३८४ भेद गिनाये हैं ।

चतुर्थ विनोद में स्वकीया के सभी भेदों के उदाहरण देकर उसके अंतर एवं बाह्य स्वरूप का वर्णन किया गया है ।

पंचम विनोद में मुग्धा मध्या और प्रौढ़ा की दृष्टि से नायिका के भेद किये गये हैं । मुग्धा की दस दशायें कही जा चुकी हैं । मध्या की आठ अवस्थाओं के लक्षण और उदाहरण[1] दिये गये हैं ।

प्रौढ़ा के दस हाव होते हैं । इन हावों में भावों की स्थिति होती है, जो रस के कारण होते हैं । यहां पुन: कवि नायिका भेद को कवि रस की दृष्टि से सार्थक करता है ।

गौण श्रृंगार : संयोगेतर अवस्थाओं को रौद्र, करुण और दुख आदि के कारण गौण श्रृंगार कहते हैं । इनकी ५ अवस्थायें होती हैं । 'मान' के तीन भेद बताने के अनन्तर अन्य संयोग दुखिता, ज्येष्ठा और कनिष्ठा इत्यादि के वर्णन हैं ।

षष्ठ विनोद में परकीया, ऊढ़ा, ऊढ़ा का उराहना, प्रेमाधीन ऊढ़ा तथा अनूढ़ा के उदाहरण । स्वकीया नायिका में ८ गुणों की स्थिति होती है जबकि परकीया कुल से रहित होती है । वेश्या में इन में से अनेक गुणों का अभाव रहता है । शुद्ध रस स्वकीया में ही होता है, परकीया में प्रेम तो रहता है पर रस नहीं होता । परकीया के ६ भेदों के लक्षण और उदाहरण ।

मुग्धा आदि के क्रम से स्वकीया के १३ भेद परकीया के दो भेद तथा एक एक सामान्या को मिलाकर १६ भेद होते हैं । प्रत्येक की ८ अवस्थायें करने से १२८ तथा तीन गुण के अनुसार विभाजन करने से ३८४ नायिकायें होती हैं । गुणों के उदाहरण एक ही छन्द में हैं ।

इस विवेचन का अंतिम वाक्य है 'इति नाइका मुष्य गौन रस वती प्राचीन मत तीन सौ चौरासी भेद नवीन भेद तीन सौ चवालीस'

नायिका-भेद वर्णन करने के पश्चात कवि ने चार प्रकार के नायकों के लक्षण व

१- स्वाधीना का लक्षण नहीं है । संभव है प्रतिलिपिकार के प्रमाद से वह छूट गया हो।

उदाहरण जिनकी
की दृष्टि से ४ प्रकार के होते हैं। जिस प्रकार नायक का हितू सखा होता है उसी प्रकार नायिका पक्ष में यह काम सखी करती है जो शिक्षा और संयोग कराने में सहायक होती है। सप्तम विनोदमें रस चर्चा है। स्थायी भाव ही रस की स्थिति ग्रहण करते हैं। विभाव, अनुभाव, सात्विक संचारी आदि का रस-क्षेत्र में स्थान। नवों रसों के स्थायी भाव और उनके विभाव तथा अनुभाव।

हास्य रस की परिभाषा और उसके तीन भेदों का उल्लेख है। इसी प्रकार करुण, रौद्र, वीर(इसके लक्षण में युद्ध वीर दयावीर और दानवीर के संकेत निहित हैं) भयानक, वीभत्स, अद्भुत रसों के लक्षण व उदाहरण दिये गये हैं।

इस के अनंतर देव वन्दना, आशीर्वचन और आत्म परिचय के अनन्तर ग्रन्थ समाप्त होता है।

रासा भगवंतसिंह का

प्रति परिचय : सदानंद कवि की कृति ' रासा भगवंतसिंह का ' नागरी प्रचारिणी सभा की पत्रिका में संवत् १९८१ में प्रकाशित हुआ है। हमारे अध्ययन का आधार यही है। बाबू बृजरत्नदास को इस रचना की प्रति भिनगा राज्य में मिली थी। इसकी एक प्रति राजा बलरामपुर के पुस्तकालय में भी है परन्तु हमने उसे नहीं देखा।

प्रामाणिकता : यह रचना कवि सदानंद की ही है यह ग्रन्थ में कविनाम की छाप से विदित होता है। कवि ने छंद के आग्रह के अनुसार कहीं ' नंद ' और कहीं ' सदानंद ' नाम की छाप छोड़ी है।

रचनाकाल : प्रस्तुत कृति में कवि ने रचनाकाल नहीं दिया है परन्तु उसके वर्णन इतने सजीव और आत्मीयतापूर्ण हैं कि कवि का नायक का समकालीन होना सिद्ध होता है। अत: यह कृति भगवंतराय के निधन के थोड़े ही समय पश्चात् लिखी गई होगी।

वर्ण्य विषय : कवि सदानंद ने भगवंतराय के कोड़े परगने पर अधिकार और रसूलाबाद की मालगुजारी के प्रश्न पर भगवंतराय के साथ उसके नायब नूर मुहम्मद का संघर्ष और नूर मुहम्मद की पराजय को सादत खां और भगवंतराय के बीच हुए युद्ध का कारण बताया है।

प्रस्तुत रचना में नायक भगवंतराय के जीवन के अन्य पक्षों पर भी अच्छा प्रकाश पड़ता है। इस छोटी सी कृति में कविने रस और छन्दों की नियोजना में बड़ा ही कौशल प्रदर्शित किया है। छन्दों में कवि ने दोहा पद्धरी, मत्त गयंद, त्रोटक, भुंजग, प्रयात, कुंडलिया, गीतिका, लीलावती, चन्द्रकला, त्रिभंगी, ससिवदना, सैखनारी, रूप घनाक्षरी सर्वकल्यान दण्डक और कवित्त का प्रयोग किया है। इस प्रकार छन्दों की रसानुकूल योजना से रचना में बड़ी ही स्फूर्ति आ गई है। रस की दृष्टि से भी कवि की यह कृति अत्यंत सफल है। भाव, रस और देशकाल के उचित विचार के कारण यह कृति एक सरस और सफल खण्ड काव्य है। कवि ने प्रकृति चित्रण की नियोजना में अन्तर्वेद के दुर्भाग्य का पूर्वाभास किस कुशलता से इंगित किया है यह दृष्टव्य है -

'तबहीं सर छांड़ि मराल गये
चकई चकवा बहु सोग लए
अति हर्ष उलूकन नैत्र खुले
सकुचे जल जात कुमुंख फले' - रासा०

इस रचना में भगवंतराय का दाम्पत्य उनकी दानवीरता और उनके उत्साह आदि का चित्रण बड़ी ही वैज्ञानिक रीति से किया है। सब मिलाकर काव्य और इतिहास दोनों ही दृष्टियों से यह रचना बहुत ही उपयोगी एवं महत्वपूर्ण सिद्ध होती है।

भगवंत विरुदावली

प्रति परिचय : असोथर के आस पास इस रचना की लोक-प्रियता अपेक्षाकृत अधिक रही है। इसकी एक हस्तलिखित प्रति श्री शिव नारायण सिंह के पास बहुत पहले हमने देखी थी। उसका प्रतिलिपिकाल संवत् १६१० था। उसके पन्ने पन्ने अलग और जीर्ण थे। बाद को उसे दीमक चाट गये। थोड़े दिन बाद जब मैंने उसकी प्रतिलिपि करने की इच्छा प्रकट की तब वह प्रति तो न मिली पर शिव नारायण सिंह ने असोथर के एक वृद्ध ब्राह्मण के यहां से एक प्रतिलिपि लाकर दी। वह अच्छी दशा में थी। उसका प्रति लिपि काल संवत् १६८० था। इधर जब मैंने शोध के लिए इस विषय को लिया और पुन: उस प्रति को अच्छी प्रकार से देखने की इच्छा प्रकट की तब वह प्रति नहीं मिल सकी। वृद्ध सज्जन का स्वर्गवास हो चुका था और उनके पुत्रों ने टाल मटोल कर दी। अत: पहले की गई प्रतिलिपि को ही आधार माना गया है जो परिशिष्ट में संगृहीत है। इसमें प्रतिलिपि

करते समय की असावधानी में कुछ पंक्तियां मुफ़ी से छूटगयीं थीं ।

प्रामाणिकता : गोपाल कवि ने जो इसके [redacted] रचयिता हैं, [redacted] रचना में अपने नाम की छाप छोड़ी है । अत: इसे गोपाल कवि की ही रचना मानना ठीक है । कवि का परिचय लिखते समय हमने अनुश्रुतियों का उल्लेख भी किया है, उसे भी प्रमाण में ग्रहण किया जा सकता है ।

रचना काल : कवि ने इस कृति में रचनाकाल नहीं लिखा है परन्तु अपने वर्ण्य विषय में वह भगवंतराय का सामयिक ही प्रतीत होता है ।

वर्ण्य विषय : कवि ने बड़े ही सरल और स्वाभाविक भाषा में अपने नायक की कीर्ति और उनके अंतिम युद्ध को अपना वर्ण्य बनाया है । प्रासंगिक रूप से उसने कुछ पूर्वकालीन विजयों का भी उल्लेख कर दिया है । वर्णन सरल होने के कारण बड़ा ही हृदयग्राही है । इस के माध्यम से कवि की नायक के प्रति पूर्ण सहानुभूति प्रकट होती है एवं उसका हृदय अपने विषय में पूर्ण रूप से रमता हुआ प्रतीत होता है । इसमें नायक के धर्मवीर और युद्धवीर रूपों का चित्रण बड़ी सफलता से प्रस्तुत किया है । अपनी अकृत्रिम भावाभिव्यक्ति में ही रचना का साहित्यिक महत्व है । इसमें नायक का चरित्र कहीं भी आलंकारिकता या कौशल प्रदर्शन आदि के कारण दबता हुआ नहीं मिलता ।

भगवंतराय खीची का जंगनामा

प्रति परिचय : `भगवंतराय खीची का जंगनामा` रचना की केवल एक ही प्रति मिली है जो असोथर के पास बेरुई के श्री जुगल किशोर वैद्य के पास है । इस रचना की मूल प्रति स्वयं हमें देखने को नहीं मिली । वास्तव में इसका पता कैप्टेन शूरवीर सिंह को लग गया था जो फतेहपुर के जिला नियोजन अधिकारी थे । वे इसे प्राप्त करना चाहते थे । ग्रंथाधिकारी ने उनके भय से इसे किसी को दिखाना व बताना भी बन्द कर दिया । श्री शिवनारायण सिंह के बहुत कहने सुनने पर अपने घर बैठकर उन्हें ही इसकी प्रतिलिपि करने की वैद्य जी ने अनुमति दी थी । हमें श्री शिवनारायण सिंह की ही की हुई प्रतिलिपि को अध्ययन का आधार बनाना पड़ा है ।

प्रामाणिकता : यह रचना मुहम्मद कवि की है। कवि ने मुस्लिम परम्परा के अनुसार रचना का आरम्भ हम्द से किया है। हम्द में खुदा की प्रशंसा की जाती है। हम्द के उपरान्त नात है। नात में पैगम्बर की तारीफ रहती है। हम्द और नात के अतिरिक्त शाहे वख्त की वन्दगी है जो कहीं कहीं आरम्भ में इन सबके बाद में होती है परन्तु इस रचना में वह अन्त में आई है :-

' मुहम्मद शाह के कहते
उसी के राज में रहते
वही साहेब हमारा है।

इसके अतिरिक्त भाषा व शैली पर भी फारसी का बहुत अधिक प्रभाव है। रचनाकार की शैली व उसके संस्कार जहां एक ओर पूर्ण रूप से मुस्लिम संस्कृति की पृष्ठभूमि को इंगित करते हैं वहीं भारतीय संस्कृति का प्रभाव भी स्पष्ट परिलक्षित है। इसमें विजात छंद का प्रयोग है जो हिन्दी का अपना छन्द है। इस प्रकार यह रचना तत्कालीन दो भाषाओं के साहित्य का समन्वित रूप प्रस्तुत करती है। कविके वर्णन व नायक के प्रति उसकी सहानुभूति एवं ऐतिहासिक घटनाओं की सत्यता आदि कवि को नायक का समकालीन सिद्ध करने के लिए प्रभुत प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

रचना काल : ग्रन्थ के अन्त में कवि ने रचनाकाल भी निबद्ध कर दिया है -

चहल सी चहल सन लहते मुहम्मद शाह के कहते
उसी के राज में रहते, वही साहेब हमारा है '

इस प्रकार रचना तिथि चहल - ४० - सी - ३० - चहल - ४० = ११६० हिजरी है। ईसवी सन की दृष्टि से यह समय लगभग १७४८ था।

वर्ण्य विषय : ईश्वर (खुदा) की वन्दना के पश्चात कवि ने अपने ग्रन्थ-नायक के पौरुष का बखान किया है। घटनाओं की दृष्टि से जहां अन्य कवियों ने अपने वर्णनों को केवल भगवंतराय के अंतिम युद्ध में ही अपनी रचना को सीमित रखा है वहां इस कविने कोड़े से फौजदार जा निसार खां के साथ हुए युद्ध से प्रारम्भ करके भगवंतराय के अंतिम चार युद्धों को सविस्तार सामने रखा है। जा निसार खां कीपराजय के पश्चात वजीर आजम कमरुद्दीन खां के आक्रमण में वजीर-पक्ष की स्थिति का इस रचना में अच्छा परिचय प्राप्त होता है जो इतिहास की गहरी शोध के लिए सामग्री प्रस्तुत करता है। इस

आक्रमण के समय भगवंतराय बुन्देलखण्ड में बच कर निकल गये और वजीर के दिल्ली की ओर जाते ही पुन: आक्रमण कर के अपना पूरा प्रदेश अपने अधिकार में कर लिया । इस परिस्थिति में इनके दमन के लिए कमरुद्दीन खां ने सादत खां को पत्र लिख कर यह कार्यभार सौंपा । सादत खां ने गाजीपुर के दुर्ग पर आक्रमण किया और भगवंतराय ने डट कर उसका सामना किया जिसमें खां को मजबूर होकर संधि करनी पड़ी । संधि के पश्चात् भी उसके हृदय से कटुता का भाव न गया और उसने दुर्जन सिंह नामक व्यक्ति को इनका अन्त करने के लिए राजी कर लिया । दुर्जन सिंह धोखा देकर गाजीपुर के किले में अपने आदमियों को लेकर प्रवेश कर गया और उसने भगवंतराय का वध कर दिया । अंत में कवि ने रचना की प्रेरणा व अपना परिचय, रचना तिथि तथा शाहे पख्त की बन्दगी में उपसंहार किया है ।

अलंकार दीपक

प्रति परिचय : प्रस्तुत ग्रन्थ की प्रति काशीराज के सरस्वती पुस्तकालय रामनगर वाराणसी में प्राप्त हुई है । इसमें केवल दोहा छन्द का ही व्यवहार है । जिनकी संख्या ४३५ है । इस का प्रतिलिपिकाल संवत वि० १८५६ है ।

प्रामाणिकता : इस ग्रन्थ के रचनाकार कवि शंभुनाथ मिश्र ने बहुधा दोहों में अपने नाम की छाप छोड़ी है इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने गुरु (सुखदेव) की भी ग्रंथारंभ में वन्दना की है । जैसा कि हम लिख चुके हैं कि सुखदेव मिश्र के शिष्य शंभुनाथ मिश्र ही भगवंतराय से सम्बन्धित थे अत: इस ग्रन्थ के रचयिता शंभुनाथ मिश्र भी दूसरे नहीं हैं । इसके अतिरिक्त शिवसिंह सेंगर से लेकर अब तक के समस्त हिन्दी साहित्य के लेखकों ने भी अलंकार दीपक को शंभुनाथ मिश्र की ही रचना बताया है । कवि ने किसी भी दोहे में किसी भी व्यक्ति का उल्लेख नहीं किया है ।

रचना तिथि : कवि ने रचना तिथि नहीं दी है । कवि का समय हम निश्चित कर चुके हैं जो विक्रम की १८वीं शताब्दी के अंतिम चरण के पश्चात भी १०-१५ वर्षों तक रहा होगा । इसी बीच यह रचना लिखी गई होगी । इसके दोहे गठे हुए हैं और उनमें काव्य सौष्ठव भी पर्याप्त है अत: उसे निरी प्रारम्भिक रचना भी कहा नहीं जा सकता । फिर भी रचना तिथि को कवि के कविता काल के बीच अनुमान के आधार पर ही निश्चित करना होगा ।

वर्ण्य विषय : उपमा, लुप्तोपमा(७ भेद) अनन्वय, उपमेयोपमा, प्रतीप(५ भेद) रूपक (६ भेद) परिणाम, उल्लेख(२ भेद) स्मृतिमान, भ्रान्तिमान संदेह अपह्नुति(६ भेद)। उत्प्रेक्षा (७ भेद) रूपकातिशयोक्ति, सापह्नवा, भेदकातिशयोक्ति (६ भेद) तुल्य योगिता (४ प्रकार) (भाषा भूषण से अंतर दीपक दीपका वृत्ति(३ भेद) प्रतिवस्तुपमा, दृष्टान्त, निदर्शना(३ भेद) व्यतिरेक (३ भेद) (भाषा भूषण से भिन्न) सहोक्ति, विनोक्ति (दो भेद) समासोक्ति, परिकार, परिकरांकुर, श्लेष(३ भेद) (भाषा भूषण से भिन्न)प्रशंसा(भाषा भूषण से भिन्न) अप्रस्तुत प्रशंसा (२ भेद) संबंध (भाषा भूषण से भिन्न)(५ भेद) प्रस्तुत अंकुर पर्यायोक्ति (२ भेद) व्याज स्तुति, व्याज निदं, निदांस्तुति, रूप व्याजस्तुति, स्तुति निंदा, व्याज निदां, व्याज स्तुति। आक्षेप (३ भेद) विरोधाभास, विभावना (५ भेद)(भाषा भूषणसे भिन्न) विशेषोक्ति,असंभव, असंगति (३ भेद) सम (३ भेद) विचित्र, अधिक (२ भेद) कारनमाला (भाषा भूषण स में इसे गुम्फ कहा है) एकावली (२ भेद) (भाषा भूषण में अल्प) माला दीपक सार, यथा संख्य, पर्याय(२ भेद) परिवृत्त, परिसंख्य, विकल्प, समुच्चय(२ भेद) कारक दीपक, समाधि, प्रत्यनीक काव्यार्थ पत्ति, काव्यलिंग, अर्थांतर न्यास (२ भेद) (भाषा भूषण में इसके भेद नहीं हैं) अनुज्ञा, लेसु(२ भेद) भाषा भूषण में भेद नहीं) मुद्रा, रत्नावली, तद्गुण, पूर्वरूप(२ भेद) अतद्गुण, अनुगुन, मीलित, सामान्य, उन्मीलित विशेष, उत्तर, द्विविध चित्र (भाषा भूषण में चित्रोत्तर) सूक्ष्म पिहित, व्याजोक्ति, गूढोक्ति, विवृतोक्ति, जुकुति, छेकोक्ति, लोकोक्ति, वक्रोक्ति, स्वभावोक्ति, भाविक,(२ भेद) उदात्त(२ भेद) अत्युक्ति (३ भेद) निरुक्ति, प्रतिशेध, विधि, हेतु (३ भेद)

विशेष : शंभूनाथ मिश्र का प्रस्तुत ग्रन्थ महाराज यशवंतसिंह के 'भाषा भूषण' का अनुवर्ती है। अलंकारों के लक्षण उदाहरण और विभाजन में भी उनका बहुत अधिक प्रभाव है फिर भी कुछ स्थानों पर भिन्नता भी है, जैसे - जसवंतसिंह के 'गुंफ' और 'अल्प' शंभुनाथ के ग्रन्थ में 'कारनमाला' और 'सूक्ष्म' नाम से अभिहित हैं। भेद की दृष्टि से 'अवज्ञा' 'श्लेष्ठ' संबंध, तुल्ययोगिता और 'एकावली' में अंतर है। कवि ने स्थान स्थान पर अपने ग्रन्थ का आधार 'भरत मुनि' को बताया है।

रस कल्लोल

कवि शंभुनाथ मिश्र की रस कल्लोल नामक रचना का पता १६२० की खोज रिपोर्ट

से लगता है । यह ग्रन्थ पं० राम प्रताप द्विवेदी ग्रा० गोपालपुर, डा० असनी जिला फतेहपुर के पास था । अब इस ग्रन्थ का पता वहां के लोग नहीं बताते । यह ग्रन्थ रस और नायिका भेद विषय पर केन्द्रित है । खोज रिपोर्ट १९१२ में भी इस ग्रन्थ का उल्लेख हुआ है जिसमें इसके अन्तर्गत ७७५ श्लोक तथा नायिका भेद विषय का निरूपण बताया गया है ।

भगवंतराय का यश वर्णन
(भगवंतराय की विरुदावली?)

१९२० की खोज रिपोर्ट में शंभुनाथ के रस कल्लोल ग्रन्थ के साथ ही के २९२ अनुष्टुप छन्दों में ` भगवंतराय का यश वर्णन ` रचना का उल्लेख भी मिलता है । परन्तु जैसा कहा जा चुका है कि असनी में अब इन ग्रन्थों का पता नहीं लगता । इस रचना की जो विषय-वस्तु खोज रिपोर्ट में दी गई है उसके अनुसार इतना प्रतीत होता है कि इस रचना को कवि ने बैसवारे के राजा रनजीत सिंह के आश्रय में रहकर लिखा था ।

रसतरंगिणी

इस ग्रन्थ की एक खंडित प्रति काशी नागरी प्रचारिणी सभा के संग्रहालय में है । इसमें रस का विवेचन किया गया है जिसमें कवि के गंभीर अध्ययन की छाप है । इस कृति का विस्तृत परिचय ` हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास ` भाग षष्ठ के पृष्ठ ४०२-४०३ में दिया हुआ है ।

रति-विनोद चंद्रिका

प्रति परिचय : इस ग्रन्थ की एक हस्तलिखित प्रति काशिराज के सरस्वती पुस्तकालय में सुरक्षित है । ग्रन्थ तीन ` विनोदों (अध्यायों) में विभाजित किया है । जिसमें कुल छंद संख्या १०३ है । सम्पूर्ण वर्ण्य-विषय केवल नायिका भेद में ही सिमटा हुआ है ।

प्रामाणिकता : ` रति विनोद चंद्रिका ` अथवा ` विनोद चंद्रिका ` के लेखक उदयनाथ ` कवीन्द्र ` हैं । अपने ग्रन्थ में उन्होंने स्वयं अपने दोनों ही नामों के उल्लेख किए हैं । नाम की छाप के अतिरिक्त कवि की भाषा-शैली और काव्यगत प्रौढ़ता से यह रचना कवीन्द्र की ही कृति प्रतीत होती है । ग्रन्थ में न तो रचना

काल दिया हुआ है और न आश्रय दाता का ही उल्लेख हुआ है, अत: ग्रन्थ-रचना-काल के निर्धारण के लिए कोई निश्चित आधार नहीं मिलता । परन्तु 'कवीन्द्र' की छाप होने के कारण यह 'रस-चन्द्रोदय' के बाद ही की रचना मानी जायेगी क्योंकि 'रस चन्द्रोदय' की रचना करने पर ही उन्हें 'कवीन्द्र' की उपाधि मिली थी । ग्रन्थ रचना का उद्देश्य रसिकों का विनोद तथा ग्रन्थ को लोकप्रिय बनाकर ख्याति अर्जित करना ही प्रतीत होता है ।

वर्ण्य विषय : प्रथम विनोद में कवि ने स्वकीया नायिका का वर्णन किया है और दूसरे में परकीया का । तृतीय विनोद में नायिका और नायक के सम्बन्धों की दृष्टि से आठ अवस्थायें और उनके उदाहरण दिये हैं ।

विशेष : यह ग्रन्थ नायिका भेद की दृष्टि से भी अत्यन्त सामान्य और चलताऊ है । उदाहरणों की दृष्टि से ही इसका कुछ महत्व हो सकता है । प्रौढ़ा नायिका की विपरीत रति का चित्रण करने से इसमें रुचि का हलका पन है ।

रस दीपक

१६०४ की खोज रिपोर्ट में उदयनाथ कवीन्द्र के 'रसदीपक' नामक ग्रन्थ के काशिराज के सरस्वती पुस्तकालय में पाये जाने का उल्लेख है । परन्तु अब यह ग्रन्थ वहां नहीं है । खोज रिपोर्ट में इसका रचना-काल कवि के ही शब्दों में १७६६ विक्रमी दिया हुआ है ।

'सत्रह सतक निन्यानवे कातिक सुदि बुधवार
ललित तृतीया में भयो, रस-दीपक अवतार'

खोज रिपोर्ट में इस ग्रन्थ का वर्ण्य विषय नायक नायिका भेद लिखा है । ग्रन्थ की रचना अमेठी के राजा गुरुदत्त सिंह के आश्रय में हुई थी । गुरुदत्त सिंह के समय और रचनातिथि में कोई विक्षेप नहीं पड़ता, अत: इस ग्रन्थ की रचना तिथि निश्चित है । सम्प्रति यह रचना अप्राप्य है ।

रस चन्द्रोदय

'हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास' भाग ६ के पृ० ४२४ में उदयनाथ 'कवीन्द्र' कृत 'रस चन्द्रोदय' रचना का विस्तृत परिचय मिलता है । हमें यह ग्रन्थ देखने को नहीं मिला । उक्त परिचय के अनुसार यह ग्रन्थ रस और नायिका भेद विषय का आख्यान करता है तथा इसी का दूसरा नाम 'विनोद चन्द्रोदय' भी है ।

मदन रसार्णव

प्रति परिचय : प्रस्तुत ग्रन्थ लीथो में प्रकाशित भी हो चुका है परन्तु अब वह संस्करण अप्राप्य सा है । काशिराज के सरस्वती पुस्तकालय रामनगर, वाराणसी में इसकी लीथो में मुद्रित प्रति के अतिरिक्त एक हस्तलिखित प्रति भी है । इसका प्रतिलिपि काल संवत् १९५९ है ।

प्रामाणिकता : इस ग्रन्थ में कवि ने अपने आश्रयदाता डौड़िया खेरे के राव मर्दनसिंह का परिचय निबद्ध कर दिया है तथा वीर रस के उदाहरण स्वरूप आये छन्दों में भी उन्हीं की प्रशस्ति है । इसके अतिरिक्त अपने नाम की छाप 'मिश्र सुखदेव' भी छोड़ी है ।

रचना काल : कवि ने यद्यपि रचना-तिथि नहीं दी है परन्तु आश्रयदाता के समय के आधार पर उसका अनुमान किया जा सकता है । मर्दनसिंह का समय संवत १७६७ वि० तक था इसलिए यह रचना इस समय के आसपास ही निर्धारित की जा सकती है ।

वर्ण्य विषय : प्रस्तुत रचना में कवि ने नायिका भेद और रस का विवेचन प्रस्तुत किया है । आरम्भ में नायिका भेद नायक और दूती का वर्णन है इसके पश्चात् रस का प्रकरण है । ग्रन्थ का आधार भानुदत्त की रस तरंगिणी है । उनके लक्षणों से ये बहुत अधिक प्रभावित हैं । उदाहरण सर्वथा मौलिक और अत्यन्त पुष्ट हैं ।

विशेष : यह ग्रन्थ सुखदेव मिश्र की उत्कृष्ट काव्य प्रतिभा का परिचायक है । इसकी प्रति लंदन की ब्रिटिश म्यूजियम में भी सुरक्षित है तथा आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भी इसके काव्य सौष्ठव की प्रशंसा की है ।

छंद विचार अथवा पिंगल छंद विचार

प्रति परिचय : इस ग्रन्थ की अनेक प्रतियां प्राप्त हैं । खोज रिपोर्टों में पं० कृष्ण बिहारी मिश्र की खंडित प्रति का उल्लेख है । उस प्रति के खंडित अंश के प्रारम्भिक १७ दोहे भी अब डा० ब्रज किशोर मिश्र (लखनऊ विश्वविद्यालय) को मिल गए हैं । उनके एक शिष्य ने इस ग्रन्थ की एक हस्तलिखित प्रति के आधार पर इसे पूरा किया है।

इस ग्रन्थ की एक प्रति रायबरेली जिले के तरुण उपन्यासकार व कवि श्री अमर बहादुर सिंह ' अमरेश ' को भी प्राप्त हुई है। डा० ब्रज किशोर मिश्र की प्रति का प्रतिलिपिकाल संवत् १६४३ विक्रमी है।

प्रामाणिकता : यह ग्रन्थ हमारे आलोच्य सुखदेव कवि का ही लिखा हुआ मालूम होता है। कविनाम की छाप, ' मिश्र सुकवि सुखदेव ' है, जो उनके मर्दन रसार्णव तथा रसदीपक में भी है। इस छाप के आधार पर उन्हें अन्य सुखदेव नाम के कवियों से अलग करने में सहायता मिलती है। इसके अतिरिक्त इनकी शैली व काव्यगत प्रौढ़ता रसार्णव से बहुत अधिक मेल खाती है। हिम्मतसिंह के लिए ग्रन्थ समापन में जिस प्रकार इन्होंने आशीर्वचन कहे हैं वे भी हमारे आलोच्य सुखदेव की प्रकृति के अनुकूल मालूम पड़ते हैं।

रचना काल : रचनाकार ने इस कृति का रचना काल नहीं दिया है। अत: हिम्मतसिंह के समय को देखते हुए इसे लगभग संवत् १७८० या १७८५ रचना माना जा सकता है।

वर्ण्य विषय : जैसा कि इस ग्रन्थ के नाम से स्पष्ट है, कि यह पिंगल विषय का ग्रन्थ है। कवि ने स्वयं लिखा भी है कि हिम्मतसिंह के आदेशानुसार इस पिंगल ग्रन्थ की रचना उसने की है :-

' नृप हिम्मति के हुकुम तै, मिश्र सुकवि सुखदेव
न्यारे न्यारे कहत है, पिंगल के सब भेव '
प्रथम वृत्तांत। ३६

इस ग्रन्थ के आरंभिक ३६ दोहों में विस्तार पूर्वक हिम्मतसिंह का वंश वृक्ष व उनकी प्रशंसा की गई है। पूरा ग्रन्थ दो वृत्तांतों (खण्डों) में विभाजित है। प्रथम वृत्तांत में मात्रिक छंदों के लक्षण व उदाहरण हैं जिनकी छंद संख्या २७३ है। दूसरे वृत्तांत में वर्णिक छंद हैं जिनकी छंद संख्या २३४ है। प्रथम छंद के लक्षण दोहों में लिखे हैं पश्चात् उनके उदाहरण हैं। ग्रन्थ के अंत के उदाहरणों में हिम्मतिसिंह की प्रशस्ति है।

रस रत्नाकर

प्रति का परिचय : इस ग्रन्थ की एक ही प्रति मिलती है जो नागरी प्रचारिणी सभा के हस्तलिखित ग्रन्थों के संग्रह में विद्यमान है। प्रतिलिपिकार कोई अत्यन्त साधारण पढ़े लिखे व्यक्ति थे जिन्होंने बहुत अशुद्ध लिखा है। इस कथन के प्रमाण

में कहा जा सकता है कि विशुद्ध या विसुद्ध को विसध्व लिखा गया है। इसी प्रकार 'कछुक' जैसा सरल शब्द 'कद्वक' हो गया है। ऐसी अशुद्धियां थोड़ी नहीं। इनके लिए प्रतिलिपिकार ही उत्तरदायी है।

प्रति खंडित है। प्रारम्भ के १२ दोहे नहीं हैं। शेष सब हैं। ग्रन्थ दोहा छन्द में ही लिखा हुआ है, जिनकी संख्या ३२१ है।

प्रामाणिकता : यह कृति भी परीक्षा करने पर भगवंतराय और मर्दनसिंह से संबंधित सुखदेव मिश्र की प्रमाणित होती है। कविने डौंड़िया खेरे का राव मर्दनसिंह के यहां इसकी रचना की थी। मर्दनसिंह की वीरता के कई उदाहरण वीररस प्रकरण में संकलित होने से यह सिद्ध होता है :

यह मरदाने राउ को देख्यौ सहज सुभाउ
रनमुख सनमुख होत मुख चढ़त चौगुनो चाउ

२४६ दो०

आश्रयदाता के निश्चित हो जाने पर इस कृति का अन्य किसी सुखदेव कवि द्वारा लिखित होने का संदेह नहीं खड़ा हो सकता। दूसरे इस ग्रन्थ के लक्षण के दोहे रसार्णव से कई स्थानों पर मिल जाते हैं। इससे भी दोनों ग्रन्थों की रचनाकरने वाले एक ही सुखदेव कवि का प्रमाण मिलता है।

रचना तिथि : ग्रन्थ में कवि ने रचना तिथि नहीं दी है। परन्तु इसकी काव्य सामग्री में रसार्णव का सा निखार नहीं है। इस आधार पर इसे रसार्णव से पूर्व की रचना मानना संगत होगा। मर्दनसिंह के ही आश्रयकाल में इसके लिखे होने से इसे रसार्णव के रचना काल के लगभग निकट ही मानना ठीक होगा।

वर्ण्य विषय : ग्रन्थ का प्रारम्भ नायिका भेद से होता है। १०६ दोहों के कलेवर में लक्षण और उदाहरण संपुटित हैं। इस प्रकरण में कोई नवीनता नहीं है। प्रारम्भिक कृति होने के कारण कवि ने कुछ नयी नाम संज्ञायें देने काउपक्रम अवश्य किया था जिन्हें स्वयं उन्होंने ही बाद को रसार्णव में नहीं स्वीकार किया। जैसे सुरति गोपना के प्रतिष्यमान सुरति गोपना, वर्तिष्यमान सुरति गोपना नाम इस ग्रन्थ में तो हैं पर वे रसार्णव में नहीं हैं।

नायक भेद : नायिका भेद के पश्चात कवि ने नायक भेद प्रस्तुत किया है। इस प्रकरण में

भी रसार्णव से कोई विलगाव नहीं । इसी क्रम में ` दरसन ` का वर्णन करके रस का प्रसंग उठा लिया गया है ।

रस : रस की परिभाषा में निम्नलिखित दोहा दिया गया है जो रसार्णव में दिए गए दोहे से बिल्कुल मिलता जुलता है ।

मिलिविभाव अनुभाव ते संचारी सात्विक आनि
स्वाद सहित भावहि करै वाही को रस जानि `
२१६ दो०

सभी रसों का वर्णन अत्यन्त संक्षेप में करके तैंतीस संचारियों का वर्णन एवं ग्रन्थ की परि-समाप्ति है ।

अन्य कवियों की रचनायें

भगवंतराय के मंडल के नेवाज, भूधर, चतुरेश, इन्द्र, कंठ, मल्ल, सारंग, श्यामलाल तथा हेम आदि कवियों की रचनायें स्फुट रूप से या तो संग्रह ग्रंथों में मिलती है या फिर लोगों की स्मृतियों में । पुस्तक रूप में इनकी रचनायें नहीं प्राप्त होती ।

नेवाज कवि की `छत्रशाल विरुदावली ` नामक छोटी सी रचना(८० श्लोक) का पता खोज रिपोर्ट सन १९१२ में चलता है परन्तु अब वह रचना दिये हुए पते पर नहीं है । इसी प्रकार ` अमरावती ` नामक कृति को भी जिसका उल्लेख खोज रिपोर्ट १९०६ में हुआ है - निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि वह ग्रन्थ हमारे आलोच्य कवि का ही है।

भूधर कवि(जिनका सम्बन्ध भगवंतराय से था) की रचनायें भी स्फुट रूप से मिलती है । परन्तु हाल में इनकी "ध्यान " बत्तीसी " नामक रचना बड़ौदा विश्व-विद्यालय के हिन्दी विभाग को गोविन्द गिल्ला भाई के संग्रहालय से मिली है । रचना की भाषा-शैली आदि से निश्चित होता है कि ये भगवंतराय के यहां रहने वाले भूधर कवि ही होंगे । यह रचना बहुत छोटी है । कुछ ३२ कवित्त सवैये छन्द हैं जो कृष्ण और राधिका के ध्यान में लिखे गये हैं । कवि की निष्ठा व तन्मयता का सचमुच इसमें पूरा पूरा निर्देश मिलता है । भूधर नाम के कवि की सुदामा चरित्र नामक एक रचना का पता त्रैवार्षिक खोज रिपोर्ट की १४वीं जिल्द में मिलता है । खोज रिपोर्ट में उदाहरण स्वरूप जो छन्द दिये गये हैं वे उतने पुष्ट नहीं हैं जितने कि ` ध्यान बत्तीसी ` अथवा भूधर नाम के कवि के प्रकीर्ण छन्द हैं, फिर भी इस रचना की परीक्षा की जा सकती है । बहुत संभव है यह भी इन्हीं भूधर कवि की कृति हो ।

इन दो कवियों के अतिरिक्त शेष कवियों कै जो भी छन्द हमें प्राप्त हुए हैं उनको परिशिष्ट में दे दिया गया है।

रचनाओं का वर्गीकरण

इस अध्याय में जिन रचनाओं का परिचय दिया गया है उनमें जो रचनायें भगवंतराय के जीवन को कथ्य बनाती हैं या उन्हीं के आश्रय काल में लिखी गई हैं, केवल उन्हीं का विवेचन अगले अध्याय में अभीष्ट है।

इस प्रकार जैसिंह विनोद, भगवंतराय खीची का जंगनामा, भगवंत विरुदावली, रासा भगवंतसिंह का एवं वीर मुक्तकों की सामग्री को मुख्य आधार बनाया गया है।

उपर्युक्त रचनाओं में `जैसिंह विनोद` रस तथा नायिका भेद का ग्रन्थ है जिसमें श्रृंगारी रचनायें हैं। शेष सभी रचनायें वीर रस की हैं। इसके अतिरिक्त जैसा कि रचनाओं के नामों से स्पष्ट है, इनमें विनोद, जंगनामा, विरुदावली और `रासा` आदि काव्य रूप भी हैं। अत: अगले अध्याय में इनके काव्यरूप के अतिरिक्त श्रृंगार और वीररस की दृष्टि से इनके काव्य सौष्ठव पर विचार किया गया है।

इन सभी रचनाओं में नायक के वंशव उसके जीवन चरित को ही लक्ष्य करके लिखी गई सामग्री की प्रमुखता है जो इतिहास का विषय है अत: इसकी ऐतिहासिकता पर विचार करना आवश्यक हो जाता है। इसके लिए `इतिहास निरूपण` अध्याय में स्वतंत्र रूप से इस प्रसंग पर विचार किया गया है।